दागिस्तान का किस्सा

किसी अमीर खान ने किसी गरीब से पूछा, "बत्तख का कौन-सा हिस्सा सबसे ज़्यादा मज़ेदार होता है? अगर ठीक जवाब दोगे, तो इनाम मिलेगा।"

"पिछला।" गरीब ने फौरन जवाब दिया।

जब बत्तख बनकर तैयार हो गई, तो खान ने इसी हिस्से को चखा और उसे बेहद पसन्द आया। उसने दूसरे गरीब से पूछा, "भैंस का कौन-सा हिस्सा सबसे ज़्यादा मज़ेदार होता है?"

दूसरा गरीब आदमी भी इनाम पाना चाहता था, इसलिए उसने पहले की तरह ही जवाब दिया, "पिछला।"

खान ने उसे चखा और इस दूसरे गरीब को कोड़े लगवाए।

बड़े अफसोस की बात है कि उन लेखकों के लिए कोड़े नहीं हैं, जो सोचे-समझे बिना अलग-अलग मौकों पर एक ही बात दोहराते रहते हैं।

अब ऊनसूकूल की छड़ी के आलेख की कहानी सुनिए।

मास्को के साहित्यकार व्लादलेन बाखनोव छड़ी के सहारे चलते हैं। छुट्टियों में दागिस्तान जाते हुए मैंने उनसे वादा किया कि ऊनसूकूल के प्रसिद्ध कारीगारों की नक्काशीवाली सुन्दर छड़ी उन्हें लाकर दूँगा। घर पहुँचते ही मैंने अपने एक परिचित नक्काश को इस हेतु पत्र लिख भेजा। सिर्फ एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी कि इस छड़ी पर लिखवाया क्या जाए।

इसी समय एक समाचारपत्र में साहित्यिक विषय पर एक बड़ा लेख निकला। उसका शीर्षक था – "आलोचना की जगह डण्डा।"

"बहुत खूब," मैंने सोचा, "ऐसा आलेख मास्को के साहित्यकारों को भेंट की जाने वाली छड़ी के लिए बिल्कुल ठीक रहेगा।"

दो हफ्ते बाद छड़ी तैयार हो गई। ऊनसूकूल की छड़ियों में यह सबसे बढ़-चढ़कर थी। उचित स्थान पर ये शब्द शोभा दे रहे थे – "व्ला. बाखनोव को। आलोचना की जगह डण्डा। रसूल हमज़ातोव की ओर से।"

मखचकला, किस्लोवोदस्क, प्यातिगोर्स्क के स्मृति-चिन्हों की दुकानों तथा पहाड़ी गाँवों की मण्डियों में ऊनसूकूल की छड़ियाँ बिकती हैं।

कुछ अर्से बाद इन सभी जगहों पर "व्ला. बाखनोव को। आलोचना की जगह डण्डा। रसूल हमजातोव की ओर से" आलेखवाली छड़ियाँ बिकने लगीं। यहाँ आने वाले लोग ऐसे आलेख वाला उपहार खरीदते समय हैरान हुए होंगे। मगर सबसे अधिक हैरानी तो मुझे हुई।

हुआ यह कि बुज़ुर्ग कारीगर, जिन्होंने पहली छड़ी बनाई, रूसी भाषा का एक शब्द भी नहीं जानते थे। मैंने कागज़ पर जो कुछ लिख भेजा था, उन्होंने उसे ज्यों का त्यों छड़ी पर उतार दिया। उन्होंने सोचा कि अगर कवि ने छड़ी पर ये शब्द लिखवाने चाहे हैं, तो इनमें ज़रूर कोई बड़ी समझदारी की बात छिपी होगी। तो भला यही शब्द दूसरी छड़ियों की शोभा क्यों न बढ़ाएँ?

मेरा दागिस्तान से साभार

मेरा दागिस्तान
लेखकः रसूल हमज़ातोव
प्रकाशकः राजकमल
मूल्यः 150 रुपए